© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 11 Issue: 04 | October - December 2020
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed and Peer Reviewed Journal

छायावाद पर गांधी जी का प्रभाव

डॉ. सुनीता रानी सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय सैक्टर–14 पंचकूला

विवेचनाः

हिन्दी साहित्य के इतिहास में खड़ी बोली हिन्दी का स्वर्णकाल, छायावाद है। द्विवेदी युगीन साहित्य की इतिवृत्तात्मकता को छोड़कर लाक्षणिकता प्रधान कविता की रचना हुई। इस काल में एक तरफ तो छायावादीपन की कविताएं सृजित की गई वहीं दूसरी स्वच्छन्द राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा जिसमें माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजनरेश त्रिपाठी प्रमुख हैं। बच्चन, सुभद्राकुमारी चौहान, नरेन्द्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' राष्ट्रीयता के साथ–साथ प्रणय, वात्सल्य भाव की कविता भी रची। छायावदी चतुष्टय में निराला, प्रसाद, पंत और महादेवी वर्मा की सृजना आती है। इनकी रचनाओं में छायावाद की समस्त प्रवृत्तियां लक्षित हैं। डॉ. नन्द किशोर नवल के अनुसार छायावाद को दो महायुद्धों के बीच की कविता भी कहा गया है। यह कहना अत्यंत युक्ति संगत है, वशर्ते इसके पीछे स्थित गंतव्य को समझा जाये। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने किंचित विस्तार से यह बतलाया है कि छायावाद की प्रमुख प्रेरणा प्रथम विश्वयुद्ध के परिणामों से आई थी। इस युद्ध ने हिन्दी के नवशिक्षित युवकों पर साम्राज्यवाद के ध्वंसक रूप को पूर्णतः अनवृत कर उनमें उपनिवेश विरोधी चेतना की प्रवल तरंग उत्पन्न कर दी। छायावाद उनके 'वंधनमुक्त चित्त' की ही अभिव्यक्ति है, द्विवेदी जी ने सही कहा था कि 1920 में गांधी जी द्वारा जो असहयोग आन्दोलन आहुत किया गया था वह मात्र राजनीतिक आन्दोलन न होकर एक महान सांस्कृति आन्दोलन था। उस दौर में भारतीय समाज में स्वाधीनता की आकांक्षा, राष्ट्र, प्रेम, अहिंसा, गांधीवाद सदृश मूल्य व्याप्त थे। देश में अंग्रेजी शासन के प्रति आक्रोश था और अंग्रेजी शासन से मुक्ति के प्रयास कठोर थे।

छायावाद की वैचारिक पृष्टभूमिः

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 11 Issue: 04 | October - December 2020
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed and Peer Reviewed Journal

छायावादी काव्य की एक सुदृढ़ वैचारिक पृष्टभूमि है जो द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मकता, नैतिकता एवं स्थूलता का विरोध करती है। भारत के अतीत गौरव के प्रति सचेष्ट छायावादी कवि व्यक्ति की स्वाधीनत के साथ–साथ हर प्रकार की दासता के विरूद्ध आवाज उठाते हैं। यह दासता आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक किसी प्रकार की हो सकती है। इसमें राष्ट्रीयता का स्वर मुखरित है, गांधीवादी जीवन मूल्य है तथा वे मानवतावाद के पोषक है। उनका रहस्य भले ही विद्वानों के अनुसार अंग्रेजी की रोमांटिक काव्यधारा से समुद्भूत रहा हो, किन्तु वे प्रकृति, प्रेम और सौन्दय को अपने काव्य में प्रमुखता से अभिव्यक्ति देते रहे।

भारतीय जनमानस में आशा, उत्साह एवं आत्मविश्वास का संचार करने के लिए कवियों ने भारत के अतीत गौरव का गान किया। प्रसाद के गीत 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रवुद्ध शुद्ध भारती' में भारत महिमा का विशद वर्णन है। निराल ने अपनी 'दिल्ली' नामक कविता में भारत के अतीत गौरव एवं वर्तमान दुर्दशा का चित्रण करते हुए लिखाः

''क्या यह वही देश है–
भीमार्जुन आदि का कीर्ति क्षेत्र
चिरकुमार भीष्म की पताका ब्रह्मचर्य दीप्त
उड़ती है आज भी जहां के वायुमण्डल में
उज्ज्वल अधीर और चिरनवीन।।''

छायावाद का जीवन दर्शन भी आशावादी एवं संसार में प्रवृत्त करने वाला है। कामायनी ने जिस जीवन दर्शन का उल्लेख, वह प्रवृत्तिमार्गी है। कामायनी में शैव दर्शन के अन्तर्गत आने वाले प्रत्यभिज्ञा दर्शन की मान्यताओं को स्वीकार किया गया है। कामायनी में प्रसाद जी ने वुद्धिवाद से पीड़ित हमारे वर्तमान युग के हृदय और वुद्धि के संतुलित समन्वय का रास्ता दिखाया है और यह प्रतिपादित किया कि जीवन में आनन्द की प्राप्ति तभी संभव है जब हृदय एवं वुद्धि का संतुलित समन्वय किया जाता है। वे इच्छा, ज्ञान और क्रिया के समन्वय पर भी बल देते दिखाई पड़ते है।

ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है,

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 11 Issue: 04 | October - December 2020
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed and Peer Reviewed Journal

इच्छा क्यों पूरी हो मन की।

एक दूसरे से मिल न सके,

यह विडम्बना है जीवन की।।

छायावाद पर गांधी जी का प्रभाव :

गांधी जी एक ऐसे युगपुरूष थे जिन्होंने अपने सिद्धान्तों से समग्र युग चेतना को प्रभावित किया। तत्कालीन समाज, राजनीति, साहित्य सब पर गांधीवाद का विशद प्रभाव पड़ा है। छायावादी कविता भी गांधी जी के सिद्धान्तों से प्रभावित दिखाई पड़ती है। कामयानी की श्रद्धा तकली पर सूत कातती है, हिंसा का विरोध करती है और मनु को प्रवृत्तिमार्ग का संदेश देती है। मानवतावाद, विश्ववन्धुत्व, लोक कल्याण के जो स्वर छायावादी काव्य में दिखाई पड़ते है उन्हें गांधी का ही प्रभाव समझना उचित है। यदि हमारे जीवन में व्याप्त विषमता दूर हो जाए और हम समरसता को अपना ले तों संसार का स्वरूप ही बदल जाएगा। एक ऐसे विश्व के दर्शन होंगे जहां कोई सात्विक नहीं, कोई तापित नहीं:

शापित न यहां है कोई तापित पापी न यहां है।

जीवन वसुधा समतल है, समरस है जो कि जहां है।।

गांधी जी भारत के राजनीतिक क्षितिज पर सूर्य की भांति जब देदीप्यमान थे तभी हिन्दी काव्य में 'छायावादी' कविताएं लिखी गई, अतः युगीन प्रभाव को ग्रहण करना अवश्यम्भावी था। गांधी जी के चरखे की अनुगूंज हमे प्रसाद की श्रद्धा के तकली चलाने में दिखाई पड़ती है।

चल री तकली धीरे–धीरे, प्रिय गए खेलने को अडेरा।

प्रसाद जी के काव्य में राष्ट्रीयता एवं स्वदेशानुराग की जो भावन है वह भी युगीन प्रभाव ही है। भारत भूमि की श्रेष्ठता का प्रतिपादन ये निम्न गीत में करते हैं–

अरूण यह मधुमय देश हमारा

जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 11 Issue: 04 | October - December 2020
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed and Peer Reviewed Journal

छायावादी कवि पंत जी ने अपनी रचनाओं में गांधीवाद को अभिव्यक्त किया है। उनकी 'बापू के प्रति' कविता गांधी जी के सत्य, अहिंसा एवं प्रेम के सिद्धान्त को अभिव्यक्ति देती है। 1936 ई. में रचित इस कविता में गांधी जी की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए पन्त जी कहते हैं–

सुख भोग खोजने आते सब,
आए तुम करने सत्य खोज,
जग की मिट्टी के पुतले जन,
तुम आत्मा के मन के मनोज।।

कवि की धारणा है कि गांधी ने 'पशु बल' से लड़ने के लिए 'आत्मबल' का हथियार दिया और विद्वेष एवं घृणा पर विजय पाने के लिए 'दुर्जय प्रेम' का पाठ पढ़ाया।

निराला भले ही 'क्रांतिदूत' रहे हों पर उनकी रचनाओं में भी गांधी और गांधी दर्शन के प्रति आदर भाव व्यक्त हुआ है। इस विवेचन के आधार पर यह कहना समीचीन होगा कि छायावादी कविता गांधीवाद से प्रभावित रही है।

संदर्भ

1. आर. गुप्ता — यू.जी.सी. (हिन्दी) आधुनिकता : अवधारणा और उसके उदय की पृष्टभूमि
2. डॉ. अशोक तिवारी — आधुनिक काव्य (छायावाद)
3. **डॉ. अशोक तिवारी** — **आधुनिक काव्य (छायावाद)**